“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

यूहन्ना 2:1–4 में, जब गलील के काना में एक विवाह समारोह हो रहा था, तो यीशु की माता ने उससे कहा कि विवाह में दाखरस (अंगूरी रस/मदिरा) समाप्त हो गया है। यीशु ने उत्तर दिया:

“हे स्त्री, मुझसे तू क्या चाहता है? अभी मेरा समय नहीं आया है।” (यूहन्ना 2:4)

यह उत्तर सुनकर कुछ लोगों को यह कठोर या चौंकाने वाला लग सकता है, लेकिन यीशु के इस उत्तर को सही रूप से समझने के लिए हमें “मेरा समय” शब्दों की गहराई और उसके आत्मिक अर्थ को समझना होगा।

1. मरियम की अपेक्षा और यीशु की प्रतिक्रिया

मरियम केवल एक व्यावहारिक समस्या की ओर संकेत नहीं कर रही थीं—वह चाहती थीं कि यीशु कोई चमत्कार करें। उनकी यह इच्छा इस समझ से उत्पन्न हुई थी कि वह जानती थीं कि यीशु कौन हैं। यह एक अलौकिक समाधान की याचना थी।

यीशु की प्रतिक्रिया कोई अपमानजनक उत्तर नहीं थी। “स्त्री” शब्द उस समय यहूदी संस्कृति में एक सम्मानजनक संबोधन था। यीशु

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

दरअसल मरियम की दृष्टि को एक सामाजिक समाधान से हटाकर परमेश्वर की समय-सारणी की ओर मोड़ रहे थे।

“अभी मेरा समय नहीं आया है” यह बताता है कि यीशु मनुष्यों के आग्रह से नहीं, बल्कि परमेश्वर के समय के अनुसार कार्य करते हैं—even अपनी माता से भी।

2. “वह समय” क्या है? एक आत्मिक दृष्टिकोण

यूहन्ना के सुसमाचार में “मेरा समय” का अर्थ बार-बार यीशु की महिमा के समय से है, जो निम्न घटनाओं को समेटता है:

उसका दुःख उठाना (पैशन),

उसका क्रूस पर मरण,

उसकी पुनरुत्थान (पुनर्जीवन),

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

और उसकी महिमा में आरोहण।

यह “समय” उस योजना की परिपूर्णता है जिसे परमेश्वर ने उद्धार के लिए ठहराया था।

बाइबिल के कुछ उदाहरण:

“तब वे उसे पकड़ने का यत्न करने लगे, पर किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।”
(यूहन्ना 7:30)

“यीशु ने उत्तर दिया, अब मनुष्य के पुत्र की महिमा का समय आ गया है।”
(यूहन्ना 12:23)

“यीशु यह जानकर कि उसके पिता के पास जाने का समय आ पहुँचा है…”
(यूहन्ना 13:1)

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

इसलिए, यूहन्ना 2 में यीशु यह स्पष्ट कर रहे थे कि उनके दिव्य कार्य को प्रकट करने का समय अभी नहीं आया था। एक सार्वजनिक चमत्कार उनके मिशन को उजागर कर देता और वह घटनाएँ तेज़ हो जातीं जो उन्हें क्रूस तक ले जातीं।

3. जब “वह समय” आया

जब यीशु ने कई चमत्कार किए और उनका प्रभाव बढ़ने लगा, तो अंततः वह निर्धारित समय आ गया। यह समय था—महिमा का और दुख का।

जब यूनानी लोग यीशु को देखने आए, जो यह दर्शाता है कि उनका प्रभाव अब इस्राएल से बाहर भी फैल रहा है, तब उन्होंने कहा:

“अब मनुष्य के पुत्र की महिमा का समय आ गया है।”
(यूहन्ना 12:23)

लेकिन उन्होंने तुरंत आगे कहा:

“अब मेरा प्राण व्याकुल है, तो मैं क्या कहूं? ‘हे पिता, मुझे इस समय से बचा ले’? नहीं, मैं तो इसी कारण इस समय तक पहुंचा

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

हूं।”
(यूहन्ना 12:27)

यीशु जानते थे कि सच्ची महिमा दुःख के माध्यम से ही आएगी।

4. हमारे लिए एक शिक्षा: परमेश्वर का समय और हमारे जीवन के मौसम

जैसे यीशु के लिए एक निश्चित समय ठहराया गया था, वैसे ही हमारे जीवन के लिए भी परमेश्वर के द्वारा समय ठहराए गए हैं—कभी उन्नति के, कभी दुःख के, कभी प्रतीक्षा के।

परमेश्वर की योजना हमारी घड़ी के अनुसार नहीं, उसकी संप्रभु इच्छा के अनुसार प्रकट होती है।

यीशु ने जीवन के इन मौसमों की तुलना प्रसव पीड़ा से की:

“जब कोई स्त्री जनने लगती है, तो उसका मन इस कारण व्याकुल होता है कि उसका समय आ पहुँचा; परन्तु जब वह बच्चे को जन देती है, तो जो आनन्द उसे हुआ उस से वे पीड़ाएँ उसे स्मरण नहीं रहतीं।”

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

(यूहन्ना 16:21)

यह हमारे जीवन में भी होता है: कभी दुःख होता है, परन्तु फिर आनन्द आता है। हमारी कठिनाइयाँ व्यर्थ नहीं होतीं—वे अक्सर गहरी आत्मिक समझ और परिवर्तन लाती हैं।

जैसा कि उपदेशक कहता है:

“सब बातों का एक अवसर और स्वर्ग के नीचे हर काम का एक समय
है… रोने का समय, और हँसने का समय; शोक करने का समय, और नाचने
का समय है।”
(उपदेशक 3:1, 4)

निष्कर्ष: परमेश्वर के समय पर भरोसा रखें

जब यीशु ने कहा, “अभी मेरा समय नहीं आया है,” तो वह पिता की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण दिखा रहे थे। यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की योजना समय पर ही पूरी होती है—न किसी दबाव से, बल्कि उसकी प्रविधान से।

“अभी मेरा समय नहीं आया है”: यूहन्ना 2 में यीशु के शब्दों की
समझ

हमसे भी यही अपेक्षा है कि हम अपने जीवन के मौसमों को पहचानें और उनमें परमेश्वर पर भरोसा करें।

प्रतीक्षा में धीरज रखें, कार्य में विश्वासयोग्य रहें, और कष्ट में आशावान बने रहें, क्योंकि परमेश्वर के समय में सब कुछ सुंदर होता है।
(उपदेशक 3:11)

शालोम।
प्रभु हमें सामर्थ दे कि हम अपने ठहराए गए समय को पहचानें और उसमें चलें।

कृपया इस सिखावन को उन लोगों के साथ साझा करें जिन्हें यह उत्साह और आशा दे सकती है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp